योगदर्शन में अविधा का स्वरूप

पिरमल मण्डल

महर्षि पत्तुलिनि ने योग के परिपूर्ण देते हुए कहा है- योगक्षणवृत्तिनिरोधः। 1 उनके अनुसार ये चिन्तवृत्तियाँ पाँच व्रृत्ति के है- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति। इन पाँच वृत्तियों में इस विपर्यय वृत्ति को अविधा तथा तम आदि नामों से जाना जाता है। 2 ग्रन्थकार विपर्यय वृत्ति को लक्षण करते हैं- विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतूपप्रतितिवः। 3 अर्थात् वस्तु के यथा रूप में स्थित न होने वाला मिथ्याज्ञ ही विपर्यय नाम की वृत्ति है। जैसे कि शुक्त का शुक्त के रूप में ज्ञान न होकर जब रजत के रूप में ज्ञान होता है तब उसे विपर्यय कहा जाता है। इस विपर्यय वृत्ति अविधा, अज्ञान, माया, अंधस्वरूप आदि नामों से प्रचलित है। महर्षि पत्तुलिनि के अनुसार यह विपर्यय स्वरूप अविधा पाँच प्रकार की है- अविधा, अस्मिता, राग वेष, अभिनवेश। 4 ये अविधादि केलों का हेतु होने से ग्रन्थकार इन पाँचों को कहते हैं। भाष्यकार व्यास ने अविधादि को तम, मोह, महामोह, तामिक, अन्धतामसर के समान कहा है। 5 इन अविधादि को वृत्ति के रूप में स्थित न होने वाले महात्माओं का प्रति स्वरूप कहते हैं। 6 इन वृत्ति के रूप में स्थित न होने वाले महात्माओं का कल्याण करने के लिए तम, मोह, महामोह, तामिक, अन्धतामसर के भेद में पाृथिवी अविधा प्रकट हुई है। सांख्यकारिका के रचयिता ई०स० ई० आदि का ६२ प्रकार अविधा भूत भूता भूता है। इन तम आदि का वृत्ति का वर्णन है। 7 इन अविधादि का वर्णन निश्चित प्रकार से है। 8 महर्षि पत्तुलिनि के अनुसार अविधा पाँच क्लेशों में से सर्वप्रथम अविधा का वर्णन किया है।
अथार्त अनित्य, अपिवतर्, दुःख, और अनात्मा में आत्मवाति ही अविवा है। भोगवृत्ति के अनुसार-

अत्समस्तिदित प्रतिवासोविवेरीतविवियायाः: सामायक्षां।

अर्थात् जिस में जर्म नहीं है उसमें उसका भान अविवा कहलाता है। साधारण शब्द में, पदाथर्म का वास्तविक स्वरूप को जानना ही अविवा है। महर्षि पंजुलि ने अविवा के लक्षण यूत्र में चार प्रकार के भेद किया है।

1) अनित्य में नित्य का ज्ञान होना।
2) अपिवतर् में पिवतर्ता का बोध।
3) दुःख में सुख की अनुभूति होने का ज्ञान।
4) अनात्मा में आत्मा की अनुभूति होना।

अनित्य में नित्य का ज्ञान होना

व्यास भाष्य के अनुसार इस अनित्य पदाथर्म में नित्यपदाथर्म का ज्ञान होता है वही अविवा है। जैसे घट अनित्य है, पुष्पीति नित्य है, चन्द्रमा और तारों वाला स्वर्गीय अनित्य है, सत्वार्ती नेमके अथवा है।

अथार्त अनित्य में नित्य का ज्ञान होना

ब्रह्म भाष्य के अनुसार इस अनित्य पदाथर्म में नित्यपदाथर्म का ज्ञान होता है जो ज्ञान होता है वही अविवा है। जैसे घट अनित्य है, पृथ्वी नित्य है, चन्द्रमा और तारों वाला स्वर्गीय अनित्य है, स्वयंचारी के अथवा है।

अपिवतर् में पिवतर्ता का बोध

अपिवतर् वस्तुको पिवतर् समझना दुसरे प्रकार के अविवा है। जैसे जिस अपिवतर् शरीर को पिवतर् मानना-

तथा दुःखे सुखख्यातिविवदुःखैगुर्णवृिऑिवरोधाच्च दुःखमेव

अनात्मा में आत्मा की अनुभूति होना

भाष्यकार ज्ञानाधिकारी ने कहा है- अमरता- तथा दुःखे सुखख्याति विवदुःखैगुर्णवृिोिवरोधाच्च दुःखमेव

अवज्ञानिभक्षु भी हैं जो साधन अथवा, पुत्र, भृत्यादि चेतन पदाथर्म एवं शय्याकार आसन, कपासे अथवा सुख दुःख के साधन आत्मबुिृंके रूप में जो अमर है, अधृत जीवन के कारण ही अमर है।

अपिवतर् और अनात्मा के प्रकार और अन्तःकरण के कारण मन को पुनः पुनः संसार में जन्म लेना पड़ता है।

असिद्धान्त- आत्मा की अनुभूति होना

व्यास भाष्य के अनुसार अमरता और अनन्तर्काल का प्रकार में समय नहीं है। व्यास भाष्य के अनुसार अनात्मा का भान अविवा है। भाष्यकार अनात्मा को अविवा कहते हैं। जैसे अमर है, ज्ञानाधिकारी ने कहा है- अमरता- तथा दुःखे सुखख्याति विवदुःखैगुर्णवृिोिवरोधाच्च दुःखमेव
शक्तिरूप पुरुष तथा ज्ञान शक्तिरूप वुढ़ि जो अभिनवता न होगी भी अभिंतरता जैसा प्रतीत होती है वह अभिंतरता है।

राग- गर्न्थकार राग को परिभाषित करते हुये कहते हैं- सुखानुशयी रागः। 27 अथार्त सुख भोग के अन्तःकरण में रहने वाले जो तृष्णारूप क्लेश है वह राग कहलाता है।

द्वेष- गर्न्थकार द्वेष को परिभाषित करते हुये कहते हैं- दुःखानुशयी द्वेषः। 28 अथार्त दुःख होनेवाले पदाथर के परित करोध या घृणा को द्वेष कहते हैं।

अभिनवेश- गर्न्थकार अभिनवेश को परिभाषित करते हुये कहते है- स्वरसवाहीिवदुषोऽिप तथा रूढोऽिभिनवेशः। 29 अथार्त अज्ञानयं की तरह ज्ञानयं के अन्तःकरण में भी मृत्यु का भय अभिनवेश कहलाता है।

अतः उपयुक्त वणर्न से यह पता चलता है संसार के मूल कारण अभिनव ही है। इसी कारण व्यक्ति को संसार में आबागमन करना पड़ता है। इसी व्यक्ति को सभी भारतीय दशर्नों ने अनेक अन्य नाम से स्वीकार करते हैं। जैसे कि अभिव्यक्ति को संसार की तरह अभिनव का अर्थ है। अभिव्यक्ति की तरह अभिनवता के अन्तःकरण में भी मृत्यु का भय अभित्रित कहलाता है।

सन्दभर्गर्न्थसूची
1. योगसूत्र 1/1
2. हिंदी पात्रल योगदशर्न पृ 35
3. योगसूत्र 1/8
4. अंशिरामयातारामदेवाभिनविशेषा: पच्चकलेशः। 2.3।।
5. अतु पुण्य त्येषेऽत्येष येषाईत्येष; तत्त्वपतिता च देवावतर्मनः।
6. योगसूत्र 1/2/3
7. भेदस्तमोहस्वयो मोहस्वयम् द्वन्दविधिः।
8. तम् पुस्ताश्रावः नारायणसूत्रा। 2007, हिंदी पात्रल योगदशर्न, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
9. योगसूत्र 2/6
10. योगसूत्र 2/7
11. योगसूत्र 2/8
12. योगसूत्र 2/9